International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-3 May- June 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

शाह हुसैन- सूफियाना शायरी

Dr. Loveleen Kaur Kesar

Assistant Professor

Department Of Punjabi,

Govt. Degree Poonch.

सार

पंजाब में सूफी विचार आदर्श की स्थापना चिश्ती संप्रदाय सें समबंधित सुप्रसिद्ध सूफी कवि बाबा फरीद से हुई और आप से लगभग 275 साल बाद शाह हुसैन ने सूफी परंपरा को पंजाबी की आवाम के दिलो में अपनी काव्य प्रतिभा से संचित किया और धीरे-धारे यह काव्य परंपरा एक सजीव रूप में हमारे समक्ष रूपमान हुई है। आपका समय 1539-1599 का था । आपकी रचना का मूल विषय रहस्यवाद है जिस में आप ने परमात्मा को पति और जीवआत्मा को पत्नी की संज्ञा दी है शाह हुसैन की काफियों में जो विचार द्रिश्टीगोचर हुए हैं वह सूफी साधना मार्ग के पड़ाव के साथ समबंधित प्राप्ति की आवस्थाएं, साधना एवं आचरण के विभिन्न-विभिन्न पक्ष, सूफी साधना का अंतिम लक्ष्य इश्क भगबान से इश्क एवं अभेद होने की स्भाविक मंशा, त्याग, फखर आदि रूपमान होते हैं ।

मुख्य शब्द - रहस्यवाद, अंतिम लक्षय मोक्ष, तलब, फकर, आभेदता, इश्क ।

शाह हुसैन का सबंध मलामती सिलसिले की शाखा बहलोल शाही के साथ बताया जाता है । जिस के वाणी बहलोल शाह दरयाई थे । शाह बहलोल की शार्गिदी से आपने सूफी सिद्धातों की शिक्षा प्राप्त की । शाह हुसैन की पंजावी सूफी साहित्य की देन काफियो के रूप में है आपकी संपूर्ण रचना में आपकी सखशियत प्रतयक्ष रूप से झलकती है ।

दिल दर्दां कीती पूरी नीं,

दिल दर्दां कीती पूरी

लख करोड़ जिनें दे जुड़ेआ सो बी झूरी झूरी

पठ पेई तेरी चिट्टी चादर चंगी फकीरां दी भूरी,

साध संगत दे ओहले रैंहदे बुद्ध तिनहा दी सूरी ।

उपरोकत काफियें में तीन भाग द्रिश्टीगोचर हुए हैं पैहला दिल के दर्दो में अपना पूरा जोर लगा दिया है दूसरा भाग दिल के दर्दों से भरी हुई है तीसरा भाग दिल के दर्द ने ही दिल को पूरा दिल बनाया है।

अर्थात् दर्द ही वह सीढ़ी है जो जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ती है लाखों- करोड़ों वाले भी मायूस होते हैं क्योंकि पदार्थक प्राप्ति की भाग दौड़ में जीव आत्मा अंदर से खाली हो जाता है एवंम ऐसे कुकर्म कर बैठता है जो उसको परमात्मा से दूर कर देते हैं। आमीरी की सफेद चादर जो जीव की अध्यातमक मौत का कारण है । उसको शाह हुसैन भट्ठी में डाल के फकीरों की भूरी चादर की इच्छा रखता है वह चाहता है की वह साध संगत करे जो उसको अध्यातमक मार्ग पर चलते हुए मार्गदर्शन करे ।

बेला सिमरन दा नीं उठी राम धाया। रहओ ।

हत्थ मले मल पशोतासी , जद बेसीयां बखत विहाय

शाह हुसैन संसार की नाशवानता के बारे में बताते हुए जीवात्मा को प्रभु बंदगी से जोड़ता है ।

जीव संसारक काम धंधों, पदार्थक प्राप्तियों की दौड़ में व्यस्त होकर प्रभु बंदगी से दूर हो गया है। यह मनुष्य जन्म अनमोल है और इस जीवन में आकर जीव प्रभु बंदगी के हीरे इकट्ठे करने की बजाय पदार्थक प्राप्तियों रूपी कोयले इकट्ठे करने में व्यस्त हो गया है पर यह बात भूल जाता है की इस नाशवान जगत मे हर वस्तु मौत के बाद इधर ही रह जाएगी, जीव के साथ केवल उसके दारा किये कर्म और प्रभु बंदगी ही जाएगी अर्थात परलोक में प्रभु बंदगी, शुभ कर्म की परमात्मा के दर पर जीवात्मा के सहाई होंगे इसलिए यह मनुष्य जन्म शुभ कर्मो ओर प्रभ सिमरन में बिताना चाहिए बरना मौत के बाद जब परमात्मा के दर पर जीव के कर्मां का हिसाव होगा तब उस समय उसको पछताना पड़ेगा । समय बीत जाने के बाद पछताने से बेहतर है कि जीवात्मा अभी से प्रभु सिमरन में लग जाए । इस नाशवान जंगत में आकर हर कोई अपनी उमर भोग कर यहां से कूच कर जाता है तुम भी अपनी उमर भोग कर लोक से परलोक की ओर कूच कर जाओगे । इस जगत में केईं अमीर राजे- महाराजे भी आए, पदार्थक प्राप्ति से अपने खजाने भरे और बाद में परलोक में खाली हाथ ही चले गे उनकें दारा इकट्टी की गई दौलत अब कोई और ही इस्तेमाल कर रहा है । इसलिए जीव को प्रभ सिमरन रूपी दौलत की कमाई कर के अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए।

आशिक होवे तां इश्क कमावे । रहाओ ।

राह इश्क दा सूई दा नक्का,

धागा होवे तां जावे ।

बाहर पाक अंदर आलुदा,

क्या तूं शेख कहावें ।

शाह हुसैन अपनी काफियों में इश्क हकीकी के संकल्प को पेश करके जीव को प्रभु प्रेम में पूरा उतरने की तकीद करते हैं वह कहते हैं कि अगर जीवात्मा परमात्मा के साथ सच्चा- सुच्चा इश्क कमाए तो ही वह परमात्मा के दर पर एक खास मकाम हासल कर सकेगा।

परमात्मा से सच्चा-सुच्चा इश्क पाने के लिए इश्क हकीकी की मंजिल को पार करना पड़ता है यह मंजिल बहुत कठिन है जैसे सुई के छेद में से निकलना । इश्क हकीकी की सूई के छेद रूपी मंजिल में से वो ही सालिक निकल पाएगा जो धागे जैसे बन जाए अर्थात् लोभ, अंहकार, पदार्थक प्राप्तियों की इच्छा का त्याग करके भगवान को अच्छे लगने वाले कर्म करें । इश्क हकीकी का राही अंदर और बाहर से पाक दामन होना चाहिए । दुनियावी मायकी मंडल में उलझा हुआ जीव बाहर से पाक दामन बने रहने का दिखावा करता है और अंदर से शैतानी कर्म करता है। वह अपने आप को शेख कहलाता है लेकिन अंदर से अंहकार से भरा होता है अगर जीव अपने अंदर से अंहकार दूर कर दे और वह कर्म करे जो भगवान को अच्छे लगे तब वह भगवान के दर पर एक खास मकाम हासल कर सकता है । अर्थात् इश्क हकीकी की मंजिल की प्राप्ति के लिए जीव को विकारों, पदार्थक प्राप्तियों से मुक्त होकर खुद को शुद्ध करना जरूरी है ।

जित वल मेंडा मित्र प्यारा,

उत्थै बंझ आखी मेंडी आजजी वो ।

जोगन होवां धुप्पां पावां,तेरे कारण में मर जावां ।

तें मिलेआ मेरी ताजगी वो ।

आपकी काफियों में विरह के अंश भी मिलते हैं जीवात्मा परमात्मा के इश्क से मिले विरह की दशा में कहती है कि यहां मेरे प्रीतम का निवास है में भी वहां जाना चाहुंगी अर्थात् में अपने पति परमेश्वर की खोज जरूर करूंगी । मेरा प्रीतम मेरे अवगुणों के कारण मुझ से दूर हो गया है और मुझ से यह दूरी सहन नहीं हो रही है। में उसको किसी भी कीमत पर खोजूगी चाहे इसके बदले में मुझे इस जगत के सारे रिश्ते- नाते तोड़ने पड़े, भौतिकवादी सुख सुवधियों का त्याग करना पड़े में सब करूंगी । अगर मुझे परमात्मा की प्राप्ति के लिए खुद को खत्म करना भी पड़े में संकोच नहीं करूंगी। अर्थात् में अपनी इच्छाओं को त्याग कर अपना जीवन प्रभु के नाम कर दूंगी । अगर संपूर्ण त्याग के बाद मेरा प्रभु प्रीतम से मिलाप हो गया तो मेरा जीवन सफल हो जाएगा । में दिन –रात अपने प्रीतम को दर –दर जाग कर ढंढ रही हूं, अगर मेरा प्रीतम मुझे नहीं मिला तो मेरी मौत हो जाएगी । में प्रभु प्रेम के विरहो में अपने सर के केश खोल कर अपने गले में डाले हुए है । में अपने प्रीतम को जंगल-जंगल जाकर ढंढ तो रही हूं लेकिन शर्मिदा हूं कि में अपने अवगुणों के कारण अपने प्रीतम से दूर हुई हूं । में प्रभु प्राप्ति के लिए अपना हर पल हर स्वास प्रभु के नाम कर दूंगी ।

रब्बा मेरे हाल दा मेहरम तूं । रहाओ ।

अंदर तूं है बाहर तूं है, रोम रोम विच तूं,

तूं है ताना तूं है बाना, सब कुछ मेरा तूं ।

कहै हुसैन फकीर नी माना, में नाहीं सब तूं ।

परमात्मा दिलों के भेद जानने बाला है जीव के अंदर और बाहर, पर कण कण में उसका निवास है। शरीर भी वह खुद है और शरीर का ताना-बाना भी खुद है । शाह हुसैन अपने आप को परमात्मा का एक तुच्छ फकीर मानता है कि परमात्मा के बिना मेरी कोई हस्ती नहीं है । शाह हुसैन अपनी संपूर्ण हस्ती का अधार परमात्मा को मानते है ।

सहायक पुस्तक सूची

1. खोज दर्पण, गुरू नानक देव यूनिवर्सटी अमृतसर जुलाई ,1947

2. खोज दर्पण, गुरू नानक देव यूनिवर्सटी अमृतसर जुलाई,1980

3. खोज दर्पण, गुरू नानक देव यूनिवर्सटी अमृतसर जुलाई,1984

3. खोज पत्रिका, (संपादक- जीत सिंह सीतल) , पंजाबी यूनिवर्सटी पटियाला,1974

4. खोज पत्रिका, (संपादक- रतन सिंह जग्गी) पंजाबी यूनिवर्सटी पटियाला,1997

5. पंजाबी दुनिया, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला,1956

6. पंजाबी दुनिया, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला,1964